

DPN 5380

Title : अम्बर गीता AMBARA GĪTĀ

Run. No. 6071

Cat. No. 52

Micro. No.

Subject दर्शन / Philosophy Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / ३१३१५ / Translation

Size in cms. 25.5 x 11.5 Folios 1-25 Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Rāma Nanda Swāmi

Date: NS / SS / VS / KS 1971

Ruler / place

Caṭāra चैता

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

॥ अथ अमर गीताः ॥

श्रीगुणभोजनम ॥ श्रीगणेशायनम ॥ ॐ शुनादिशक्तीयनम ॥ यस्को अर्थ ॥ य
 के अनन्त विश्व का आत्मा शिव जो ॥ सोशं पूर्ण चर चर जगत् को शाक्षी भुक्त आत्मा
 ॥ १ ॥ भेति मार मेरा भीतर बाहिर तिने लोक संसार मा ॥ उने आत्मा स्व रूप भै रह्या का
 नृभने ॥ यो भुक्ति प्रमान को अर्थ ले पनि ॥ स्वयं रूप वक्त भेन मस्कार गन्यो को हो भेने सीसा ॥ १ ॥
 ॐ शुनादि आत्मा सत्य चित्तानन्दो ॥ तुभ्यं मर्त्य मन्त्रा मम ह्यनुभ्यं
 सिवात्मन नम देवाम देवाम परम परमात्मने ॥ १ ॥
 गयामा यस्मा संपूर्ण देवता को पनि देव भया का ॥ मेरा आत्मा ले आसे को नमस्का
 र छ ॥ भेने भुक्ति प्रमान को यस्मा मङ्गल चरण छ ॥ यसै गति माया वंश यके ऊन उई हो
 ईन ॥ फेरि ऋग्वेद पुत्पुर सामर्थ वणा ॥ ई चार वेद का पद पदार्थ ले पनि ॥ वृत्त माया

यके छ अको छैन ॥ पुन पुना मानन्द वंश ऋग्वेद का प्रमान मा छ ॥ अहं बुद्धासी ॥ प
 त्पु वेद का पद बोल्छ ॥ तत्त्व मेमि सामवेद का पद मा छ ॥ अपमात्त वंशति वन वेद का
 पद मा छ ॥ यस्मा चार वेद का निगम पद ले पनि वंश यके छो छो छैन ॥ वृक्ष विना छाजा
 छाजा विना वृक्ष ॥ यस्मा वृक्ष का छाजा का प्रमान ले पनि वंश माया यके छ भिन्द छैन ॥ अ
 र्थात् नित्य अद्वितीय चेतन्य वंश ऊन अनित्य द्वितमा चेत गयामा माया बोला
 उछन ॥ तस अर्थ वंश माया नजिके छ यके छ भिन्द छैन भुक्ति प्रमान मा सिद्धात्त छ ॥ १ ॥
 ईसा वास्पति ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ यस्मा संपूर्ण तन्त्र साख हहमा यस्मा परमेश्वर आत्मा ईश्वर
 ले गरियो पृथ्वी वि अतिरमणिय ॥ अति पियारो गरि ॥ जो को हि शक्ती मा आछा दरगा भै
 स्वहि आत्मा ईश्वर ले धाया का छन ॥ तले यो जगत् सीसार मा नाम रूप का भेद ले पनि संपूर्ण

यकैछः भिचछै न ॥ फेरि प्रमार्थ वाट विचार गरि हेर्यो पनि ॥ जसले चंदन रूपानिका संयोग ले
 छोटिया को छदा पानि पनि चन्दन भै भुगन्ध ले युक्त होई जाई ॥ तसले संपूर्ण जगत् व्याप
 ॥ २ ॥ कजानि आफू बिगनु भन्दा ममता छोडि ॥ आफ्नै पालन धर्म को भोग गरी वस्तु जो जगत्
 संपूर्ण आत्मै रहेछ भनि चिनि भावना ले गरी धन जन पुत्रादि मा पनि ममता न राखनु का
 डी डीनु ॥ आसै ज्ञान को मात्र चर्चा निष्ठा गरी रहनु भनि पूर्वाध्याय मा कहे कोछ ॥ दोआ
 पाउमा तत्व का उपदेश कहे कोछ ॥ तेआ पाउमा ज्ञान को परिणाम यक्य गर्ने कार्य कहे ॥ २ ॥
 कोछ ॥ बोथा पाउले यकै अद्वितीय वृंस्त्र छनः भनि ज्ञानिहरू का नियम कहिया कोछ ॥
 तम अर्थ वृंस्त्र माया यकै छ दोओ छैन ॥ उनै वृंस्त्र यकै मात्र रत्ना का छनः धेरै देखना का ईशा
 ले गर्दा ॥ ईशा शक्ती ज्ञान शक्ती क्रीया शक्ती भया का तिन प्रकारा उत्पन्न भया का छैन ॥
 रका

यस्तो वृंस्त्र देखि उत्पन्न भया का ईशा शक्ती पुणः फेरि वृंस्त्र मै मालिन होई जाई ॥ तम अर्थ
 वृंस्त्र माया भया बोली मात्र फरक छः पृथक् छैन ॥ ४ ॥ गोरक्ष मत कः का पद ले पनि यमै म
 खत कः सोद साधारः त्रैलोक्य यो म पंचक म ॥ सोदेहं यो न जानांति कथं सि
 द्धंति योगीन ॥ ५ ॥ यकस्त भन वृद्धा त्रिभुव पंचदेवता ॥ सोदेहं पतनंति कथं सि
 रमाः षट्चक्र १ सोद साधार २ तिन लोक ३ आकासाडी पंचतत्व ॥ फेरि यो शरीर मा
 न वृद्धा र तिन भुवः पंचदेवताः छन भनि कहे कोछ यो न जानि मा मुख ले ग या का ज्ञान
 क सो गरि सिद्ध होला ॥ वाक्य ले पनि वृंस्त्र माया यकै छन जाई नर सिद्ध छन जाई नर अह
 दोओ छैन ॥ वृंस्त्र का नाम पक्रि पाच छनः के क्य भनेः वृंस्त्र १ जीव २ सोभाव ३ काल ४ कर्म
 ५ पैति मम भाव ६ अर्थात् यकै भै विलय भै जाइ वृंस्त्र भनि जान ॥ आफ्नै सोद पमा भु

लूजोहो सो जिवहो ॥ भुख दुख मान अपमान को सम भाव कृडाः स्वभाव कृन् ॥ म.म
 कृनिश्चय रह्या होई न भैया सो भाव लिया काल भनि जानः ॥ संपूर्ण धर्म कर्म मा भु
 ॥ ३ ॥ लूनाले सगिर लाई कर्म कहिया को छ ॥ यस पुमान ले पनि वृत्त माया यके कृन् ॥ १ ॥ फेरि
 माया को पुरा चेना मछरु के के भनेः माया १ आकास २ सुंय ३ शक्ती ४ युक्ती ५ म
 तिनाम मध्ये ॥ वृत्त संयुक्त कृडाः माया १ पृथी त्यादि शं युक्त कृडाः आकास २ जल ॥ ३ ॥
 तत्व संगः शं युक्त कृडाः सुंय ३ संपूर्ण शं शारः तनुमाः सम भाव कृडाः शक्ती ४ मजो
 कृजा या कृम भंडा सिपालु को हि छैन ॥ पुजा गर्ने पदार्थ अर्के छ भैया अहंकार को सम
 भावन जोदा प्रकृति कहै को छ ॥ यसै प्रकारः पृथक् पृथक् पंचतत्व मिमी
 श्रीन पंचधारण वनिन गेः श्रीष्टि स्थिति शं हार ऊँ दे र ह्या को छर संपूर्ण यके छ ॥ ॥
 युक्ती २

भैया अर्थ लेः यस्ता व्यापकः आत्मा भव ह प भया का भनि न जानि ॥ मूर्ख ह ह जो छः वृत्त माया
 भैया छैन भनिः मन मा कर्म को फल ईशा रावी अनेक धर्म कर्म गरी हिडे काम नु व्ये ह ह जो
 छः अंधाले युक्त लोक मा पुग्न न जान्छन् ॥ तिलोकः कला कृन् भैयाः आत्मा घाति ह ह मात्र
 वक्ष्या कृन् ॥ किन भैया यस्तो पुतक्षे आफै मा वारि वाः पुकास भै र ह्या का छ दा छ दे उ
 स्ता आत्मा कण ॥ आफै अहंकारः अविद्या का दोष ले गरि ॥ उस्ता सवै मा पुतक्षे मा नः आ
 त्मा कन होई न भनि स्तान मतिः स स्कार ग र्या जो छ आत्मा घाटि कृन् ॥ तस अर्थ ते स्ता मनु
 मे जो छः जस्तो र ज्ञानः जस्तो र कर्म गप्पा को छ ॥ तसै र स्थावर जङ्ग मादिका योनि मा ज
 न्म भै फिर्द कृन् ॥ तस अर्थ यस्ता पुन्य पक्ष प्रसिद्ध होई र ह्या का आत्मा कण जानिः ज्ञा
 नि जन ह ह ले अजरः अमर होई जान्छ ॥ यस्ता आफै मा पुतक्षे पुरी दु भया का आत्मा लाई

कोदि ॥ न देखीया को कर्म फल कन ईक्षा गरी जो छ सो मनु क्षेह ॥ पुछु न भया का डोप द
 ॥४॥ अज्ञानि पशु कहि छः ते सुपापि लाई ते सौ कर्म ले यो भव संसार बाट जन्म मरण नहुति
 जन्म मृत्यु को सिर पाउ पहिरी ॥ वारी वार यो पृथ्वी तल मा फिरे रहनु पर्नाले अंधा लोक
 भनिक हलाउछ ॥ ८ ॥ यस्मा यके अखण्ड संचितानन्द स्व रूपः अवेयं बुद्धि देधि आकास उ
 ॥ १० ॥ आसुर्य नाम तै लोकी अन्ध न्य जन्म श्रावता ॥ सा जे पुण्या भी गहंति यक वात्स्य हना जना ॥ ८ ॥
 पन्न भया को छ ॥ आकास देखी वायु उत्पत्ति भया को छ ॥ वायु देखि तेज उत्पत्ति भ
 या को छ ॥ तेज देखि जल उत्पत्ति भया को छ ॥ जल देखि पृथिवी उत्पत्ति भया को ॥ ४ ॥
 छ ॥ यो पतितः पृथ्वी व्यादि देखि यो संपूर्ण पिण्डः जिव यानि गेहः श्रद्धि स्थिति र्म
 हार होई नै रह्या भुवन र्म साह व निरहे को छ ॥ तस्मात् यो पतित त्व जो छ सो मा

या हो माया भया को अर्को छैन ॥ कीन भने तिने पतित त्व जइ आकासः वन्धले गरी
 उस्ता अखण्ड संचितानन्द परं बुद्धि पति जिव कहलाय रः र ह्या को छ न ॥ तस अर्थ तिजी व
 बुद्धि चेतन्य मन जो छ बुद्धि न ॥ अनित्य अचेतन्य मन लाई जिव कहलाउछ न ॥ जवु प
 नियो सरीर कनः चेतन्य का मन वधले गरी बुद्धि माया सदा सर्वदा शमि पैं छ नः भया भु
 ति प्रमान प नि छ आये बुद्धि माया दुई छैनः यके छ ॥

अधंतम पु वि संतिः यशं भुति मुपासते ॥ ततो भुय ईव ते ज मो प उ स भु त्वा र ताः ॥
 यो भुति को अर्थ भुन उस्ता आफै कर्ता स्व रूप भया का आत्मा लाई न चिनि ॥ आत्मा भु
 भिमानि भया का प्राणि ह कहन ॥ यथा योग्य विभागः गरीया का छ डा प निः आफै क
 र्म व स ले गरी न देखीया को छ डो ॥ अनित्य फल को ईक्षा गर्दी माः अंध कार लोक मा पु वे स

॥५॥ कुन जान्या कुन ॥ तिक सा कुन भयाः जनु फेरिः सरी वना उना मातृत्पर भया का अजी हो
 जादि मा अविज्ञा का संग ले उपाशना दि अनेक कर्म गछुन ते सै कर्म का अनुसार ले गरी ॥
 ॥५॥ कैले नासन कुन्या तिनेः अन्धकार लोक मा पुवेश भै कनः संसार हपि भग वाट विना वेतीने
 ले वारं वार फिर्दैः दुख का सागर मा डुबि रहै छुनः कर्म माला ग्या सै म मुक्ति कैले पनि कुदेन
 ते सा कर्म गछुन ताप नि सो कर्म लाई जो छु न्या गरी सम गरी फेरि तत्व ज्ञानै मा रहन सः
 को भया ॥ ते सै तत्व ज्ञान का प्रभाले कर्म संगः बुद्धि बोध भै ईस्वर आत्मा स्व रूप होई जी
 छ तस अर्थ जिव बुद्धि दुई होई नय कै कुन ॥ तस अर्थ उनै अद्वैत आत्मा देषिनुः पंचत ॥५॥
 त्व पचिस् प्रकृति कुन गया कोः प्रमान भै दहु भुन ॥ आकास १ वायु २ तेज ३ आप ४ पृ
 थी वि ५ ईनि पाच तत्व यो फेरि ईन पाच तत्व मध्ये आकास को सर्व मय गुण १ वायु को नि

लवणी छ २ तेज को रक्त वर्णी छ ३ आप को श्वत वर्णी छ ४ पृथी को पित वर्णी छ ५ ते स
 मध्ये फेरिः पृथी को अंसा माया हो १ जल को अंसा अहंकार हो २ तेज को अंसा मन
 हो ३ वायु को अंसा बुद्धि हो ४ आकास को अंसा चतुष्टयः अंतस्कर्णी हो ५ ॥ यत म
 ध्ये फेरिः सद्य जो छ आकास को अंसा हो १ सेस वायु को अंसा हो २ रूप तेज को अंसा हो
 ३ रस जो छ जल को अंसा हो ४ गंध जो छ पृथी को अंसा हो ५ ॥ ईन पाच जो छ सै पु
 र्ण ज्ञान ईदियः मालय कुन जा छुन ॥ भै न ले पनि बुद्धि माया य के कुन बोली मात्र भी
 कुन य के कुन ॥ ६ ॥ फेरि वायुः आकास को अंस कुन १ पानि वायु का अंस कुन २ पानि अ
 जी का अंस हो ३ पस्थ आप का अंस हो ४ वायु पृथी का अंश हो ५ ॥ ई पाच पानि कर्म ईदी
 य माले य होई जा छ ॥ १० ॥ फेरि पनि भदहु सुनः स्वत विंशतिक लामाः माहाविष्णु कहिह ॥ पृथी

सतत्वजोह माया कुरु ॥ यत्नायकार्पुण्यकलालेयुक्तभयाकाः मनुश्चहहकाशिररुई ॥
 ॥६॥ तेसभीत्रः चतुष्टयपअंतस्फर्णर आत्मासंयुक्तः पाचतत्वः नवतत्वको भीदिर्लिंगशरिररुई
 छन ॥ ताहा सुक्ष्मजोतिर्मय अवैकहपजोह पंचतत्वलेः संयुक्तभयाकोयकसरिररु ॥
 ताहा अवस्थापनिवारप्रकार्छन जागर्तः सोप्रः भुष्टुप्रिः तुष्टियाचार अवस्था छन ॥ योप्र
 मानलेपनिर्वृत्तमायाभिच्छेदनाउमात्रभीच्छनयकेछन ॥ ११॥ फेरिउनेवल्लस्वरूप
 आत्माजोहः प्रवृत्तत्वलीकासकाजगर्तले जागर्त कहलाउछन ॥ जवतत्वका संयुक्तका ॥ ६॥
 सरिरलेः प्रमनालेस्वप्नाकहलाउछ ॥ छविसतत्वलिभुत्तनाले सोहीशरिरः भुष्टुप्रिः कुरु
 जीह ॥ सोहीवसत्मा सोहीसरिरमाः मजोहूर्वलेपोरह्याकुभनिचेतन्यात्माजायो
 भयाः तुष्टीया अवस्था कहलाउछ भंनलेपनिअहकोदे सिंदेनतत्वकेकारनमा
 हि

वदेच्छुतसअर्थवृत्तमायायकेहोभीदिछेन ॥ १२॥ भोक्ताभंनुजोहो माया कुरुः भोजे
 भंयाजोहो जिवः पंचतत्वरवायावल्लु कुरु ॥ प्रेरिताभंनुजोहोईस्वरहोः योतिनलाईभि
 दभीदिभंछन कीनभीदिछेथोः केवलः यकेवृत्तकुरु ॥ कसोगरियकेभनौलात जसे
 भोक्ताभोजेः प्रेरिताह मत्वा सर्वप्रोत्ततविधंवृत्तचेतन ॥ जिवेसानोः श्रीजं
 मानो जगत्पुद्गवंलाताहो न्ययंतवाक्यं ॥ १३॥
 उनेयकेआत्मावाटः मन बुद्धिः चित्त अहंकारः ॥ कामक्रोधलोभमोहादिसकलनिस
 क्याछन ॥ तसेईस्वरजिवः भुत्तदिमंभयासरिररुनाले ॥ नानातरहकापिसयजोह
 यकेआत्मावाटैपुकासमानगरिरह्याकोकुरु ॥ योजगत्तुजोतिह केवलयकेवृत्तदे
 सीहोईरह्याकेह तसर्थवृत्तमायायकेकुरु ॥ १४॥ जसेअर्च्यर किर्णः उईहोकीयके

॥७॥ कुरुः ब्रह्ममाया भनूपनितलैकुरु ॥ जलै समुद्रः समुद्रकातरै गयकुरुकी दुईकुरु
 जलै सुवर्णरगहनायकै कुरुकी भीदकुरु ॥ जलै खोलाको पानिर जगको पानि भीदै न
 कुरुकी यकै कुरु ॥ तलै जीव वृक्ष पनियकै कुरु भनि निश्चयले जान ॥ हे वेद धारि पदि हो
 यदिः वृक्ष जिवयकै होई न भई भन्याः ॥ वृक्ष को रजिवको स्वरूप कलै छ तव मलाई भ
 निदे पाई बुझाई ओः यदि होई न हा मिले ता भनि स्वेन्याको मान हो भई भन्याः भुति पु
 मान भुन ॥ मानि सुदित वादिकी नई छै ॥ पतो वाई मानि भुजा निजायते ॥ भन्या भुति
 को पुमान मुन ॥ पानिको र पानिले भिन्याको चिसोः दुई कुरुकी यकै हो ॥ सिव र जीवयकै
 होकी भीद हो ॥ विष्णु र नायक यकै कुरुकी भीद हो ॥ देविर अकी भनूपकै कुरुकी दुई
 कुरुः तस अर्थः सिव जिवः जिव सिव बोलिले मात्र भिंद कुरु गया को छः भीद छैन यकै हो ॥१४॥

यो चराचरचितस्वरूप संपूर्ण भुत प्राणिमाः परमात्मा स्वरूप लेगीः उनै यक
 परम स्वरूप वृक्ष मात्र रक्षा काछनः डो ओ छुदै छैनः तस्मात् जां न्याले वृक्ष माया भन्या
 द्वित विजा छोदिः संपूर्ण वृक्ष माछि न भन्या धारणा गर्नुः वृक्ष माया दुई होई न ॥१५॥
 वृक्षै शर्वत्र भुताणि जायते परमात्मा तस्मात् देवतानिः वृक्षव भति न्यवधारय ॥१५॥
 यदात्मवेद्यतस्मीनुदर भरनर कुहते अथ तस्मात् भयं भवेत् ॥१६॥
 छोता बुधी भयाका मनुष्य हर मात्र ॥ यकै अद्वीत वृक्ष लाईः जिवान्या परमात्मा अन्न
 गीः मध्या नगर्कु ध्यान गयो पदार्थ ता अकै छ भनि उपास्यर उपासक रूप अनेक
 भेद बुधि भयाका मुळ मनुष्य कणा मात्र नाना भुतिको भासित ईछ ॥ यकै छ भन्याला
 ईः भयकै न लिथो लिदै न ॥१७॥ फेरि मायाको कुरा सुनः उनै वृक्ष देवीः तिन तत्व वया

30

25

15

10

5

0

कोछ कोउ न भया ॥ तत्पद १ त्वपद २ असिपद ३ तत्पद भया को माया हो १ त्वपद
 भया को जिव हो २ असिपद भया वृत्त हो ३ ॥ जिव को अंस तत्त्व हो १ तत्त्व को अंस वे
 ॥ ८ ॥ तंय हो १ वे तंय को अंस धैर्य हो १ माया को अंस तम हो १ तम को अंस स्थूल हो १
 स्थूल को अंस जल हो १ जल जिव को अंस गुण विर्य हो १ ॥ तम गुण अग्नी हो १ रजो
 गुण रक्त हो १ ॥ फेरि जिव का नाम जो छ पाच छ जिव १ जोटि १ सुधात्मा १ अन्नरात्मा ॥ ८ ॥
 १ वृंसात्मा १ जाहादे धिउत्पन्न भया को ताही लय कून जा छ नृ र वृंल कहला उछ नृ १
 आत्मा मालिन भयो भया जिव मुक्ती कहला उछ नृ १ अनित्य तत्व मा जो छ नित्य वृ
 द्विगर्ने जिव हो अर्को होई न जले यके जिव मा मन बुधी चित अहंकार काम क्रोधादि
 त्रिगुणादि आदि प्रकास भै रह्यो है यो जग सीसा र जो छ बुले वाट प्रकास भया छ नृ १

लेऊ नृ भनि जान ॥ अजहर १ जहद २ जहर ३ अजहर भया को वृंल हो १ जहद भया
 को माया हो १ जहर भया को जान हो ३ इति न वृंल माया जान पति यके कून डो ओ हो
 ई न ॥ १६ ॥ सुने रहै छ हेरे रहै छ देखे रहै छ बोले रहै छ गोर रहै छ ॥ यति साधनाने
 अचनात् सुत्राधिपाकी सुत्राभनर पद तत्सुत्र विद्ये त्ययन सविप्रो वेद
 पारगः ॥ १७ ॥ तेन सर्व मिदं प्रोक्तीः अत्र मणि गणायुव तत्सुत्र धारय प्रोगी
 योग वित्तव दसि भिवान् ॥ १८ ॥ बहि सुत्रः तेन त्यजे द्विद्वानु योग मु
 तम मस्थितं वृंल भाव भय अर्ध धारय जे सोचेतनात् ॥ १९ ॥ हृदय
 भया को गीले जो छ कस्तुरी योग सिद्ध गताः ॥ फेरि सुति जे अर्थ सुन यके केवल अ
 तर्था मि पर वृंल देषीः उत्पन्न भया का वृंल सुत्र कणा धारणा गयी मनुष्य जो छ

cms.

5

10

15

20

25

30

स्व वेद वेदांग मापारंगत भयाका विपुल हला उक्त ॥ जलैय के सुत्र मा उभिया का मणि
 हह जो छ गुठिया का ऊँ छन ॥ तलैः उनै आत्मा हपि अत्रं यो मि बुं ह सुत्र माः संपुर्ण च
 ॥ ६ ॥ गवर जंगतः सवै उनै र एका का छन भनि जानि सोहि बुं ह सुत्र कनधारणा गयी
 योग्य स्वर योग मापारङ्गत भयाका ॥ त त दर्मि हह ऊँ छन तव उनै मात्र गुह ऊँ छन अ
 ह गुह ऊँ न सक देन यला उत म बुं ह सुत्र मा स्थित भै रह या योगे स्वर ले वाहिर का ॥ ६ ॥
 धागा का सुत्र कन त्यागि केवल उनै वैतं य बुं ह सुत्र कण मात्र धारणा गर्नु भनि बुं
 हला ले बुं हौ पनिसत भया वेदांग मा क ह्या का छन ॥ १६ ॥ भया भगवत् वाक्य को अर्थ
 ॥ छिन्न मोका र घटा नाद विमिन वत् प्राणे नो दीर्घ तं नाद अथ पुनर्सेवे स म स्वर ॥ २० ॥
 मुन ऊँ कार भया को जो छ सो बुं हौ छन तस्मात् ति ऊँ कार कन पचासन बाधी

घन्टा का नाद का रन्का है नहु ताई प्राणा या म हपि नाद ले ति नै ऊँ कार कन ॥ कमल का
 नाल का तनु है दसम स्थान पुज्ये त्र दिघ स्वर ले गी उचारन गर्नु ॥ फेरि ते स्मा मात्रा ले हिन भ
 या का पीधु विंदु कन मुलाधार चक्र देधि आरंभ गी ॥ मुर्छा तिलक कमल का कमल मा
 सुक्ष्म तनु है सम ही उथाई लेगी ॥ मन मा पुका श गी फेरि घाटा का नाद का रन्का र
 ह्या है दिघ उदात्त नाद ले गी ॥ फेरि स्व हि स्थान्मा ति नै ऊँ कार लाई स्थिर गर्नु ॥
 दिन पुर्ति पा १०११५ ॥ २० ॥ २५ ॥ ३० ॥ ३५ ॥ ४० ॥ ४५ ॥ ५० ॥ यलै पुकार लै डी न ऊँ पा व पा च मा श व
 ठा उदै वह त्र ऊँ कार न पुण्या सै म नाद मा अभ्यास गर्नु ॥ वह त्र ऊँ कार पुण्या प्रीतः कलै मु
 जानि को पनि शक्ती कुण्ड लिनि जा ग्छी न ॥ त्यो कुण्ड लिनि जागे पक्षाः आक्रासि र भित्र
 अने ग् अने ग् जाना त ह का वेनु आदि दस विंदु का दस पुकार का नाद पुका स ऊँ छ ॥ २० ॥

^सलोद्विन्दुको नाद को लक्ष्मण मुनः पृथग् विनीविनी सदुत्थुन ॥ ^{नी}द्विपङ्कजुनुनु सदुत्थुन ॥
 ॥१०॥ त्रीनियः घण्टाकारकाजसेनाद सुनिनाकनजी ॥ चतुर्थः संखका नाद सिरमा सुनिनजी
 छ ॥ पंचमः वासुणिका सदुत्थुनजी ॥ षष्ठमे अनेकतालः भमराकारा नाद सदुत्थुन
 नजी ॥ सप्तमः वेनु का अवाज सुनिना मुठवुधिविलयभै विज्ञानको ज्ञानः को नाद प्रका
 सकनजी ॥ अष्टमः मृदंगादिनाद को सदुत्थुनजी वा बासिंधी ॥ नवमः भेडी का
 नाद आदि अनेक नाद सुनिंदे हडिप्यमान भै आउछनेत्रको तेज पनिवर्ध आउछ ॥१०॥
 सरी को रोग हहस वैनास भै निरोगी कनजी ॥ दसम मेघगर्जते सदुत्थुन ज्ञानाग्नी पु
 दिप्रः भै वदन हपः सांत भै कोमल भै आउछ ॥ हिष्ट पुष्ट रुदे आउछ साखाडी को अर्थ
 पनिविना अभ्यासे ज्ञानिली नुक्छ ॥ समाधमादि धमन रुद्ध आफे वीर त्याहु भनिदेछ ॥

^{ना}यसा विना ताद को अनहद नाद को दस विन्दु मुने पछी आक्रा मोह पनिश्रय सो
 पाई कनः स्थिर होई जी ॥ हवई न भनि संखामी नुपदेन ॥ त्रुगु हव वाट सिद्धि कन
 जी ॥ यो उंकार हयिकर्म योग का अभ्यास गर्दी माः नुन बायाः षडुवाउछ १
 बुजे बाया देह फुर्दछ १ बाद बाया धातु गीर्दछ १ हरियो बाया वा वहलाछ १
 हरिया मा पटोल को भाजी मा वधानु १ सस्यो का तेल बाया आउछ १ मुख मा
 फोका उछ १ महिषाया कफ रुद्ध १ दहिखाया वाथ रुद्ध १ काबोखाया पित्त
 रुद्ध १ पिरोखाया धातु फाट १ अतिगमि खाया चन्द्रकला को शक्ती घाट १
 लघु १ चितोखाया अग्नी मर्द्ध वायु रुद्ध १ आगो बाल्या कानजिक मा वसिना
 द प्राणायाम नगर्नु गप्पा बाकुल वितभै सिरफुटि मर्न वेर रुदेन १ तस अर्थ

नाद प्राणा मास गर्दाः आगा को के कुहा वतिको जो टि प नि न हे नु ॥ ता हा गर्भिको प
 री अ म् पर्न ग यो भ न्या ग र म् पा निले म र्द न ग नु ॥ भै सिका डु द ग मी ई के रि थं दा ग री
 ॥ १११ ॥ रवानु ॥ ता हा ते जन ज र द्यु म् न ग यो भ न्या के भै सिका डु ड डु क्क ना वित के का बो ता
 तो फी ज सौ त ग री खानु ॥ फे रि श र्दि भो भ ने गा ई का डु द मा भु थो ज वानु जा ई फ
 ल पि धि ग र म् ग री खानु ॥ वा यु व को भ न्या मु गी को धि च रि मा वि ध्या नु न मु थो ॥ ११२ ॥
 जा ई फो ल मिला ई म न ता तो ग री खानु ॥ म द्रा गी भ यो भ न्या ठ रि ड भा त द्यु मा
 ग मी ई मं ता तो ग री खानु ॥ व क्त त प्या श ला ग्यो भ न्या ता तो पा नि खानु ॥ वि से स भा
 त ग वा दा मा सी रा म ल को भा त खानु ॥ पु रा ना ग क्क को रो ति खानु ॥ ज ल मा मु गी मो ट
 र रह र बि लो मा द्यु पि रो मा म रि च मु थो नु न मा सि ध्या नु न सां भ र मा नु ॥ ग

लिया मा मि श्री खानु सा ध ना गर्ने वे ला मा ज सौ सा ध ना मा ला ग्या प नि बि द्यु क दा पि क्क
 दे न ॥ वि ना वि वा र न ग री खा या वि द्यु क्क न ला ई के वे र मा थो ॥ त स अ र्थ यो स री र
 क वा छ मु ल वं ध न ग र्नु मु ल वं ध न भ या का आ स न ग र्नु ॥ मु ल वं ध न भ या का आ स न
 क न हो भ नौ ला त प म्मा स न वा धी प छा डी वा ट डु वें हा त ल गी नु न प टि पा ड को ओं ठा
 प क र्नु हो उ सै प ट्टी हा त ग रि डु वें पा ड को बु ठी ओं ठो प की ज था स क्क अ भ्या दा ग र्नु
 बि द्यु क लो व रे स्थ ल मा अ जा ई ना सा ग्गु डी मि दि गु ह ले व ता या जे ध्या न ग र्नु जो
 हो मु ल वं ध भै क्क नु ॥ फे रि च द्यु मु र्थे का मा गे ला ई दि न मा ब न्दु रा त्री मा मु र्थे व
 रो व र ग र्नु स क्यो भ न्या प नि उ त्त म् मु ल वं ध हो भ न्या को छ ॥ यो स री र क वा छ ना ना रो
 ग उ त्त म् च द्दी क्क त स अ र्थ मु ल वं ध न ग र्नु ॥ यो क हि आ या को की या यो ग जो छ ल्यो

॥१३॥ हृदयं पूर्णः निश्चयलेः ३ नैर्बुद्धयः के मानं कुर्वन् ॥ माया बुद्धि रक्षेत् ॥ बुद्धिजो ह्य
 आत्मा कोः अनहृदयः यत्ने मानः विहाई दीनु सकृच्छ ॥ अहंसे यत्ने बुद्धि विहाई दीनु
 देवादिदिना कोशमर्थं छेत् ॥ तस्य अर्थः जाहाशं मतिनैः अहंसे बुद्धिमा पुति कु
 दैतः ताहा संमत्तो ज्ञानिकु भन्या लाईः अंधा रैः माः रहै छः मन को कल्पनाः भूति
 संसा कुति दैत ॥ जब गुरु का आज्ञा ले र वधी या वेदान्त साखलेः अहंसे त आकासमा
 न व्यापक भयाका ॥ आत्मा बुद्धि जो होः मै ह्या कु भन्या पुति तपा री जब आ कै मा
 बुद्धि ससह पलाई अनभवले पुका स कु छ दे छ तव ते स ज्ञानिकोः मन को का ॥१३॥
 काह पी बीताः कल्पनाः भूतिः सबै छुटै जाई छः बुद्धिमा पुति त मन कु दै बोध कु
 दै जाई छः विना बुद्धि आत्मा का जो टि को द से न न भया संमत्तो मन के हिग या पनि

पुति मी दैत र भूति मै रहन जाई छ मुद्र मन कु दैत ॥२३॥ यस्को अर्थ मुद्रः य
 यत्नात्पतं तत्पत्तं यत्पत्तं यत्पत्तं तं हृदया बुद्धि लो ह्या निती
 तत्त्व विज्ञातम् ॥२४॥ स होवाः तद्वैत यत्ने बुद्धि वितः अस्मि द होयु
 स्मा पुमान् ले बुद्धि जी या प्राणि ह ह ले योग कर्मः तपः मत्तं जिन्या ह लाई मानः
 सा रो मां द ह अह लाई मां छे नै होई न थ ह रा उ छ ॥ द्वितवा दी मुद्र ह ह जो छ
 योग मत्तः तपो मत्त लाईः अमन् थ ह रा उ छ नू निधी छ गनी मा लो ग छ नू ॥ ३
 यमे कार न लेः ज्ञानि ह ह का मन का अभी प्राय मत्त को हि था हा पा उ नु सक दैत ॥
 तस्य अर्थः ज्ञानि ह ह का मत्त जो छ ॥ यो सं पूर्ण बुद्धि हो जो ओ छ दै दैत भन्या
 सिधांत मा न्या का ऊं छ नू ॥ यत्ना तत्त्व जी या विरक्षे न ह ह से जो छ यो दे वी या का

एह ह जो छ अमन् कु
 विज्ञातं ॥

॥१४॥ मुनिया का: जानिया का: भनिया का: गदैर हा का: लेखीया का: जो जतिकर्म छ तपो संपुर्न
 सबै ॥ देह: जिव को: अभी मान: मात्र देह छ नु: सा चो मो देन नु ॥ भनिया जवल्के नामा मु
 निले भन्या को छ ॥ तस अर्थ: बुंल माया य के छ नु ॥ २५ ॥ यसै पुमाले: य के बुंल देवी
 खेचरी १ भुचरी २ वाचरी ३ अगोचरी ४ उन्मशि ५ इन पाच मुंदा: पुका समान ग
 री डी दा: संसार मा वर्तमान गरी र हा का छ नु ॥ मुख मा खेचरी रहं छ नु १ नाख मा
 भुचरी रहं छ नु २ नेत्र मा वाचरी रहं छ नु ३ कान मा अगोचरी रहं छ नु ४ मन मा उन्म
 शि रहना कन जो छ नु ५ इन पाच मुंदा: य के बुंल देह नाले पनि बुंल माया य के छ नु ॥ २६ ॥
 निभंन सरु देन ॥ २५ ॥ फेरी मुर्तिको अर्थ मुन: यस्ता अदित बुंल कन जीव्या यो
 जो छ: सो हि बुंल हो ॥ बुंल को रूप अ को छैन भनि जान ॥ ति मे बुंल जीव्या ह र जो छ:

ते सै बुंल का मात्र मन ले प्रसी सा गरी रहं छ नु ॥ अहलाई जो छ स मुंने गदैर भनि
 गर्ग रा चार्जे: रिखीले: या गप वल्के राग मा: अधिक राग कहं छ नु ॥ ति बुंल कला छ
 नु भनि मधी ह ह लेख्वा गरी रा चार्जे आजा ग छ नु ॥ ति बुंल जो छ नु: न थुलो न सा गु:
 ल: मुक्षम: मय क: महस्य: महस्य: मलोहीत: मरखि ॥ २७ ॥ इ था मय: मन मय ॥
 ते जस्के आ प्राण मय: मन मय: य म कानि पाद मर्त मर: म बुंल इ स्तानोन
 कींचन ॥ २८ ॥ हस्ताति: य क धै न मनु: छ छं व्ययत दु: प्रे मे: पं धु: धनिरुज:
 पर आ सै: व आत्मा: माहा धु मनु से वा मु दु स व्यम ॥ २९ ॥
 न छो टो न लामु: न रा तो न कालो: विरग: ना म ह प: व र्न: ले हो न भया को: संपुर्ण वे
 वहा र ले: य सो पुमा न छ: भंन लाई पनि न भया को कनाले ॥ मनो मय: इ था मय

तेजमयः प्राणमयः नाडीपनिभयाको सुन्य ॥ भीमवाहिरभीयावेवहारूपविन
 ॥१५॥ भयाकोः संपूर्णवस्तुमापुर्णभैरहेको ॥ संपूर्णमापुर्णभैरह्याकोपनिनदेवी
 याकोः अतिचंचलः ध्यानलेधारनागर्भनक्रियाः अतिगंभीरः आदि अंत्यनभको
 अनहदनादप्रकासगर्भ ॥ यस्ताज्ञानस्वरूपनेमात्रदेधियाः विनाहृपकोहृप
 भयाकाः विज्ञानकोपरिज्ञानभयाका नामैहृपभयाका यस्तावृत्तिकरा ॥
 श्रीगुरुकाकृपाते गरीयकवेरमात्रः तेस्तावृत्तिककोरुसंनृगर्भपात्रभयापनि ॥१५॥
 योः ससारमुधवुधिः जोहः सकलधुतुनार्कनगोः निर्मलः आकाससमानः
 परीबुद्धः आत्माहृपिधुवताईपनि योमनहृपि आकाससमानभै ॥ मन
 लेहेदीमा मनैलेमात्रदेधुक्रुः अहलेदेधुदेनः तसर्थः योगकोफुरागगुभं

५ आकृष्टाउडापुपलागीरहने आकृष्टपलागाकएईरहने
 भनिवहडाहणेनामवेदसाधामाः भयाकोह ॥२६॥ योससारमाअनेकदेधी
 देवीयाकोह सुनिहः सुन्याकोह ॥ वोन्याकोह वोलुह ॥ त्योसपुर्णवनाय
 रव्याकोह ॥ वनायरविन्याजोतिपंचभुतह ॥ त्योसवैः होईन ३ भैदा ३
 निषादमा वनिरह्याकोः वनाउदानवनिने हदीनदेवी नहेदीदेवीने केलेनास
 नक्रुने पकडीनपकीने छोदीनछोदिने यस्ताजो दिव्येचक्षुलेमात्रदेधिये
 विनादिव्यचक्षुप्रांतः अहकोनैपुक्तीलेपनिनदेधीन्या यस्ताजोसेधवाकिदे
 धिनजीह ॥ तेहिबुद्धरह्येभनिबोधभयापहिज्ञानिजोह मुखेभैभैजीह
 तसअर्थवक्रतवातीनगर्भभै ॥ मुखेजोहसजनुजसोहनआउह ॥ तसअ
 र्थज्ञानिजहहलेनेतिरधाहमाएषीवाटगछिनु ॥ जस्तेयोससारताईसाचो

शी २

॥१६॥ सोरख साबो मानि अनेक फल कोई क्षागवी अनेक धर्म कर्म कृपा काष्ठादि गर्द
 छनः तेसा फल कोई क्षागवी कर्मगर्भोता निहहलाई जोछ जेम राज दे दण्ड पाउ
 या भीनि चीनुः तिनिहह नैऊ नु अहहोईनः आठो पुहर धंधार भुतो कावस प रि
 कर्मगनीले के फल मिल्योः तेसै धंधार सुता मात्र आईला गू भनि मुली आग्या गद ॥२॥
 नेहां भानासी कींचन अविज्ञात विज्ञाता विज्ञाता कोति ॥ यथादसो नेतिने पोस
 नृत्त मा प्रोतिः यईहमा नेव पसेति ॥२८॥ तदेथा महात्मस्ये उंने कुले अजुस
 वरति ॥ पूर्ण पारि वैव मेव र्य पुह र्य यता नु सं वरति स प्रीत वरात् ॥२९॥ यव वि ॥१६॥
 शानं न भस्मरति आत्मकीदात्मसि धुनात्मान न द स्वरा भवति त सर्व सुकाम
 नारे वतिः अहं वं होय विदुः स्वफलस्य विभुति मो रीद ति ॥३०॥

त

जले माहानदिमा बडे माछो जोछ सो माछोः तेसू का डुवै तमाः आउडाः जाडाः बेडाछ
 डोः पनिः पारजाडमाः एकवार आउडा जाडमाः त्यो माछो यकै डूँछ किऊँडेन ॥ जले
 महेश्व कोछा जा डुई डूँछ फियकै डूँछ ॥ तले वुंल माया पनि यकै डूँछ भनि जान ॥ य
 सा पुमान जा निया कोऊ नालेः वुंल जानि जोछ ॥ सो वुंल मालय भैरहं छनः आ फ्रा आत्मा
 वुंल माहदा गर्दछन ॥ आत्मे मा मिथुन भाव राघने जोछ उने लाईः ईस एक हुलाउ
 छन ॥ तस अर्थ तव उने ले मानः आत्मा चिंदछन ॥ अहो आसर्ज्यः मजो कु वुंल पो र
 ह्या छ भनि निम्र पले आ फ्रा सोह पचीना कन जीछ ॥ यो सै पुर्ण लोकः आ फ्रै ईशालेः
 गरी पुग्दछन र उसे लाईः वुंल माया भैयाः भ्रमना ऊँडेन ॥ यले यकै देवनालेः
 अस्वर्ज्य को पनि ईक्षार छैन ॥३०॥ अति कु नालेः मनुष्ये लाई डो पडा पमु कहः

॥१७॥ सा उक्तः मनुष्ये होई न भनलाई पति भयनः बुद्धि माया यकै ऊन ॥२८॥ जसे यकै
 उषु देवी सुजे सघर विनिः मिश्रीः काल्पिः गुद अनेक ना उऊना कन गया काऊ
 नसे आत्मा तत्व ले गर्दी माः अनेक विस्व संसार आकै आफ वनिन गया ऊन ॥
 तदिदं एवंः माया वेदः बुद्धि हा ह्यस्मी ॥ शई तित्थ सब स्या तस्य च देवा
 त्त्व ते जातः पुनौ ॥ ३१ ॥ यखा स भन्यात्मा यो न्या मर्थ देवतां मुपाते
 स अहं पन्यो ॥ ३२ ॥ गुद खण्डः शका धा मित्रा सुविकीत यो यथैः
 वेक्षो कपुर कंकना प्रायथैव हो मो विधा स्व पृथक् पृथक् यतजोः
 पदु पादां तयक सुक्ष्म सदनेयम् ॥ यथैवं जैटादिनां विनार सोपम् ॥ ३३ ॥
 जसे यकै उषु को नानार सव न्याहे ॥ २९ ॥ यकै सुव री देवीः अनेक राहना वन्याहे

यकै माता कोः अनेक ना उकाः भाडो वनिन गयाहे ॥ यकै सुक्ष्म नाः नादि देवियो
 संपुर्ण जगत् वनिन गया काऊन ॥ कला के भन्याः पति भन्या काः माठा का घडाः दि
 न विषे होई मा आकास कोः श्रीसूर्य कोः प्रतिविम्ब जोऊ जति घडाऊः घडे पिछेः श्री
 सुजे देविना कन जीऊन ॥ श्रीसूर्य जोऊ यवटे मात्रने ॥ ते स घडान छ ऊदाः
 माः सूर्य न स ऊन सकरेन ॥ ३० ॥ तुल्ले अंत ज्या मि औत्मा देवी यो संपुर्ण च
 वरः जगत्पानि हृपुका सभे देवन याऊनः संसार पाणि हृन छ ऊदा आत्मा
 न छ ऊदेन ॥ ३१ ॥ मुर्तिको अर्थ सुन ॥ अहो आसूर्य यो जगत् जोऊ पुमानुले
 विचार गरी हेदी यो जगत् माया स्वरूप मात्र भैरहे को देखि छ भैऊन ॥ जीया मु
 निहृ जोऊनः योग माव स्या का काल वधत्मा ॥ योजी वजोऊः माया वनि भुक्ति रहे

कोपनिः॥ श्रीगुरुकारुपातेः सर्वव्यापकस्वसोपहोईजीछ ॥३२॥ तस अर्थः त्वो वि
 सयहेदीमा तेसपुहसलाई जोछः दुनुदिदेवतापनिः अनिमादिअव सिद्धीलि
 याडीडाऊ भैया अभी पायगछु ॥ यत्ता बुंल भावकन्या मनुष्ये जोछ संपुण
 देवताहहका आत्मास्वहोईजीछु अहमुषपाणीको केभा उछु ॥ तस अर्थ
 जिवंअयकैऊ ॥३३॥ बुंल भजनगन्यालेः बुंल भजनकोडीः देवताहहको भज
 नगनामा लाग्या भयाः त्वो मनुष्येः द्वितवधि भैः जस मनाडीका सागर बाट छु तेन
 तसर्थद्वीत भाकोडी माया बुंल यकैऊ भैया वीवेक विचार गर्नु जोहो सिद्धान्त
 ऊन अर्को सिद्धीतछेन ॥३४॥ अर्को नाना कल्पनाः को विचारछाडी अहं मयक
 सेरछाहुः निश्चयले मुझमा अहंका एदिहहकनपनि पुकासगन्या आकेरछा

निद विचारस्यममिहस दुहेवाहसमसीतंस श्रीदानदलक्ष्मीनसं

दुः फेरिमजोछु अवेयअभिनासिः सतः भैयापनिः मेरछाहु ॥ योदेहनिश्च
 यलेपनिमेरछेहु भैया वीवेक विचारगारि ॥ अहंमजोछुः समसांत पुण बुंल
 पनिमेऊ ॥ संपुण उपाधिरहितः भयाकोभयाः चिदानंद सोहपनिः मआफेर
 छाहु ॥ अहंबुलास्त्री भैयाः महावाक्यका अनुभवबुझनालेपनि बुंलजोछमे
 रछाहु ॥ असत्यः द्वितरूप म होईन रछाहुः भनि निश्चय गर्नु जोछः सोसा
 निऊन ॥ द्वितजाहोईन भनि अवेणवुधिभयाकोः आत्मा तत्वज्ञानाः जानि
 लेकहेकलेपनि बुंल मायायकैऊनः भिदछेन ॥३५॥ हे आत्मा वादि मुझहोः
 अहंमेको मुझमसोजाता साडीशदा वेयम्ः तदहं नवसंदहं देहस्व सडुप्राज्ञानमि
 आत्मास्वरूपसहिरकन ॥ पतन्या देनंतर समायता अंको रात्मा सधुति ॥

ले ३

॥१६॥ उक्तीले गरियो मरीर्मा देहातिभै ॥ देहमारुकाः अन्नर्पामि आत्मा लाई सदा
सर्वदा वेवहार कारन संपूर्ण मा पूर्ण प्रकास भै ॥ फेरी आ कै मा साक्षि सो रूप ले र
ह्या का कन जांनु ॥ ज्ञान वैराग्य का युक्ती विना यस्प च भुत का नेत्र देखना लाई न
जोग्य छः योग्य छैन ॥ तस अर्थः मजो दुः ब्रह्मै र ह्या दुर्भया सचेतै ले गहिः स
दा सर्वदा चित निगल स्व भै जो रहना मा अभ्यास गर्दछ ॥ ते सै ले आत्मा का ध्यान ना
द स द ले जा नि छ भैया को छ ॥ ते सै ध्यान स द ले गहि अद्वैत परमानन्द मुक्ती दी
या होई जी छ तस अर्थ ब्रह्म जिवय के ऊन ॥ ३६ ॥ सुर्तिको अर्थ मुन ज स पु ह र
ले मजो दुः निश्चय अद्वैत केवल ब्रह्मै भनि ॥ आफ्ना सो रूप जो जी द छः उनै ले
मात्र यो कहि आया को स पुन अर्थ कः फल कनः प्राप्ती छ अहं कृपान ग यो ला

छो २

ई ऊँ देन ॥ अधी का वासना ले आज पा उंछ विना अधी को वासन न भै कोटि उपा
य जुक्ती गप्पा पनिः योक्ती या अभ्यास गर्ना मा मनु जी देनः मने नया पक्वा ला
गछ ॥ अधी का वासना ले सो स्वरूप को दर्शनः पायो भयाः ते श्रे जो ज तिकर्म ग
या को छ ते स कर्म को भोग गर्ने लाई ज मनु जान पदै नः पाप धर्म को ले प ते स
जानि ले भोग गर्नु पदै न ॥ सो सो रूप आत्मा लाई विश्व य ले जा यो भया ॥ ते स
पु ह र को महिमा को भुन स क छः देवता ह ह ले पनि विनि न स क नु छ अहं सा
स्त्र वादि ह ह को क्या भो छ ॥ ३७ ॥ प्रथम मुख बादी ह ह लेः सास्त्र मा क ह्या को पा प पुं
य ए बेडा ऊँ वृत्तां स्मि ई स व ० सर्व वी धे तिः त प स्या हि देवां औ नो भु त्या
ई स तः आ म स्व गी ० सी भा वी अत य व न स्या सि पुरा प पा प ज स त पा ॥ ३८ ॥

॥२०॥ ननु वैविचारगर्तनिमित्तवडा आत्मा जीया गुहका सरन मा जाई अची वेदीत
 पुनरुः अज्ञान देखित रींछ ॥ तव अधिहारी आया को कर्म रू फेरी गर्नु पर्याक म
 दुवे कर्म को ना स भया पछि ॥ अहो म जो कुबुंसे र ह्या कुः भैयाः आ प्रा स्व रूपः आफैले
 जांदछ ॥ त्यो जा पछि तिने सा सुले कहि गया का पा प पुं ए प को ले पर हं दे न सक पु मा
 र्थ ज्ञान स वै न प या प नि अ का स्मा त जा नि छ भ नि ह ह दा ह रा प मु ति मा पु मा न छ ॥

अह वै व ध ते त तर ति नै न कृ ता कृ ते न पा त् अ बु ध ते न भ वा न् ॥ त म स्या दि
 वा क्य स्या ज्ञा तो ज ग तो भ वा ऽ अ तु क्त व ह प स्य ॥ ३९ ॥
 य तो वे दी तः त त्व म सि मा हा वा के का अ र्थ न जी या मु छ अ ज्ञा वि द्ये त वा दि हो ति मि ह ह जो
 छ यो ज ग का मु ल भ या का वे द ले ॥ पा ग्या स्व र्गो भ व ति ॥ भ नि क ह्य को छ ते स्र वे द का वा
 विसय

के मा स त्य बु वि ग री की न मी द छो मी नु प र्दे न ॥ स्व र्ग मा जा ई अ प छ ए ह ह र्ग क र द
 दि मु ख र्ग वे व हा र ग र्ता भैया भ या का मु र्ख ह ह का वा र्टी मा कि न भु ल्य छो न भु ल
 स्व र्ग भ या को लो क न छः न छे न दुी स्ती त दे वि आ उ या को थी योः कु ए को अ भि प्रा
 य ले मा त्र दे वा ई डी या का छ नः सो र्ग म ध्ये पा ता ल भै नु जो हो म दो मा ऽ से ऊ न् अ ह
 हु ते व नि या को छे न हे मु र्ख वा डी हो बु ल मा या य के भ नि ज्ञा न अ ह छे न ॥ ३८ ॥

त त्री त न्यु ह म स्व प्र स्व प्र कि च प स्य ति ॥ अ स्मी प्रा णा ए प धा ष तिः
 त द्दे न म्वा अ स्य श र्व ना म सि स म हा वे ति ह पे स हा य ति सो त्र स र्व स
 हा य ति म स र्व ध्या नैः स हा र्थे त्रि का ले न स र्व दाः पु ति बु द्धे य था जे नः ज
 ल ना दि स्फु ति जा वि पु श्चि ते र ने व ए मे वै त स्मा ते न्न न प्रा णा प थ र्थे वि पु
 ति छे प्रा ण पे भ्या दे वे भ्यो लो का ॥ ४० ॥

जैवते स मुद्दे पद कुश जोन

॥२१॥ जैन सयमाः त्यो अद्वैत पद को योगी मुत्तुछ ॥ तव त्यो योगी को स्वप्नादि पनि देखी
 २ स्थान २ मा तहे लय विलय भै जाछ नेत्र पनि रूप ले संग भया काछदाः तहे ल
 य भै विले जाछ ॥ काज कर्म पनि स पुगी ईश्वर यहू पेच भुतादिस कल अनह
 द सकले संग कुन जां जमा तस्के नै मालय भै जाछ ॥ जब त्यो योगी पुह सः लय देखि वि
 मुह छन तव त्यो योगी ले वडी अग्नी देखि उठे का भिल्ला रे ॥ तले त्यो आत्मा स्व रूप
 अग्नी देखीः मन को काउ धन जाछन सो मन को संग कुन जां दा प्राण ह रूप निउ
 त्यन कुन गया काछन ॥ प्राण देखी जोछः देवः डै त्यः रुधि मुणी मनुक्षे जीव योनि
 गेहः सो गीडीः अछि स्थिति संहारः संपुर्ण ॥ उनै अद्वैत पुह सः आत्मा प्रभु देखि नर

चिह्न होईर को छ भनि को पितना मा भुर्तिका प्रमान ले पनिः सिव जीवः माया दु
 स्त भै मुनि य के कुनः दुइ छैन भै छन ॥४९॥ भैया भुर्तिका अर्थ मुनः यस्ता आत्मा
 अद्वैत नै पस्पन्ति तनु द्वि नि मलिः अतोपि प्रकृत्य तस्प नि सा
 ध्येति ॥ तद्यथेह कर्म चितो लोको द्वियत्यः एवं मे वात्र पुण्यः
 चिनो लोक क्षोपत्ये ॥४९॥ पत्रनाय रूपति नाय छः लोति नायीः
 लाई हित देखये मुख अर्धाह ह कण बारं बार यो भव विस्व सी सार वाट
 के ले पनिः विआमन पाई कणः फीरै रहनु पछ ॥ मुक्ती कुना को असार के
 ले पनि पाउ देनः जले माहा अज्ञानि मुख पनि जानि जसो भै यो संसार
 मा आफु ले संचय गरी याका कर्म जो छ जति छः सो संपुर्ण सवै देखे दे

30

25

15

10

5

0

जिबले

योगेनेमाधुनासवानुति ३

॥२२॥ ये यसेनेनास भैगया कोतात्पर्जे देखे छन तस अर्थ आत्मानुसेवा
 नमावस्यो ह रूपनिः सत्य गुणादिः कर्मलेगरी पुन्यलोकमात्राया जोतति छनः
 यो संपूर्णः यज्ञे प्रकालेनास कुरु पुन्यले रहै देन भैया प्रीत बुलमायाय के कुरु ॥४२॥
 हिजानाति जदत्येयो वेदान्त सीतय जेय दले ते मय एरवी आत्मा पहत
 पाप्यावितरो मय ॥४३॥ बुलै सर्व भुतानि जायते परमात्मने ॥ तस्या
 देवाणि बुलैव भवति त्ववधारयत् ॥४४॥ स्वल्प मध्य त्रं कृत्वा जि
 जुनु पुहवले आत्मा वेरीत अर्को देखापनि देखे न मुदापनि मुदेन जायपनि ॥२२॥
 जीदेनः यो पुहव विवेकि कोपनि अति विव्य कि प्रापुं छ ॥ फेरि अर्को दे
 खः अर्को मुद छ भयाः त्यो अज्ञा विजो छ सोमनु यो जम मर्न का कर्म भया कोः

३ केरत पुमात्मा सह पतेगरी उने परं बुल रखा का छन डो ओ छेनः तस अर्थ जी यासे यो चराचर जगत् ३
 अज्ञान रूपि आत्मा लाई मार्या त्यो पापिको बारें बार जम मय छु देन भभिभुति लेन
 हनालेपनिः बुलमाया भीरु होईन ॥४३॥ यो संपूर्ण भुत प्राणि चराचर जोतुं छः त्यो
 संपूर्ण उने परं बुल यके मात्र कुरु डो ओ छेनः भैनालेपनिः बुलमायाय के कुरु ॥४४॥
 वात्मा परमात्मनि ॥ यसंति य निमुकात्मा भयं तस्या भिमा सीत ॥४५॥
 पदा बुल देखयत स्मीन् नुदर भरतर ॥ कुरुते अथ तस्य भयं भवति ॥४६॥
 फेरिपनि मुनः अतिमानु कोतो बुधि भया का मुकात्मा मनुखेले मात्र यत्ना अदेत वी
 ललाईः जिवात्मा परमात्मा भैयाः द्वितगरी अंत भै मध्या नगर्ने कुरु ध्यानगर्ने
 पदार्थ वल अर्को छ भनिः उपास्यः उपासकः रूप भेद भया का देह आत्मा लाई
 मात्र भावगर्ह भासित कुरु ॥४५॥ यज्ञे बुलमाया भैया लाई अविजाले गरी दुई सरीरः
 २ मानि भेद नाया कोना मय पकन दिन

0 cms. 5 10 15 20 25 30

पनि॥ अथ स्थितिः संहारः को कारणतेः योजगान् भुवनवनिन जाडा आकै आफभु
 लनगया काहनु॥ भुलांतयार भुलया अकै केनः कोही दुई सरीर भनोलात ॥
 ॥२३॥ यकै दुई तत्वको स्थूल सरीर यकै नव तत्वको सुक्ष्म सरीर॥ इति दुई सरी मा
 पनि १५ तत्व को सरीर लाई ॥ त्रिषोडश गीः नव तत्व को सुक्ष्म सरीर को पनि वा स
 ना जति त्याग कैं छनु ॥ तव श्राफैः निर्वाण धाम मा प्राप्नु न जी छ भं ना से पनि वृत्त
 माया यकै छनु ॥४६॥ यसै गरी यस्थूल सरीर कोः सित उल्लः सुख दुख मान अप
 मोक्षः सुक्ष्म सरीर कोः वाशना अन्न स्पर्शा मा रहे न भन्याः सोहि जिवन् मुक्ति हो
 सोहि ब्रह्म कर्म कहाउछः अहंताई ब्रह्म कर्म कहाउछेन ॥४७॥ फेरि मुनः उने वृत्त वा
 ना पनि चार छ ॥ स्मरण १ पश्यति १ मध्ये १ वेद्य १ ॥ ओता लाई स्मरण कहि

छ १ नेत्र कन यस्पतिकहि छ १ स्वास कन मध्यमा कहि छ १ वाचा कणा वेद्यरि
 कहि छ १ ई को पनि चार नाम गर्नु पर्छ ॥४८॥ फेरि काम १ क्रोध १ लोभ १ म
 द १ मा भव १ मोह १ यस्मा यत्सर्ग्या विवेक माः मिथुन लाई काम कहि
 छनु १ क्रोध लाई काल कहि छनु १ ममता कन लोभ कहि छ १ वैधन लाई मो
 ह भनि छ १ यो भन लाई मद कहि छनु १ अदुत लाई मा भव कहि छ ॥४९॥
 यसै प्रकारले उने यकै अन्न र्ग्या मि ईस्वर देवी ॥ समः परिवेस्थीत ह्य भेद ज
 स्तो कृनालेः जिवई भवः वृत्त माया भनयकै हो डाओ होईन ॥५०॥ फेरि पनि
 मुनः आगोर पोल्न्याः भिदै रहो कियकै हो ना उभन्या दुई छनु ॥ तसै ही मा
 या पनि यकै छनु ना उमात्र दुई कृनालेः द्वीत भाव देष्टु मात्र गया कृनु यकै हो

॥२४॥ मनुष्येभंनु पुं सोर्थ भंया यके मरेक की दुईक न ॥ त्रिवर्दस्वरः दुईक की यके
 न ॥ सुय्यैः सुय्यै का किरीः यके क न की दुईक न ॥ तमे वुंल माया दुईक की यके
 क न ॥ फेरि मुन आ फना सिव्ये लाईः सिका उडा मा द्वे न वादिः स्व एड न गदी
 मा भयो १ यो मा हा वा के को प्रति उतर गदी मा भो १ वुंल समाई प्रति उत
 र गयाः पुते बाडी ला गे न विच मा मिही न छ ॥ ५१ ॥ यो के छ भनि भनौ लातः
 मन यव मनु खानाः कारन बंध मो छाय ॥ वंधाय विवया संगव मु
 को निर्विषयं मन ॥ श्लोका दुस पुवक्षामि दुक्तं गृथ कोटि भी ॥ ॥२४॥
 वुंल सत्यं जगत्मी यथाः त्रिवो वुंलैव के वल ॥ ५२ ॥
 वंधर मोक्ष को कारन जो छ मने छ ॥ त अर्थः मन लाई चिनु सखा मान ज्ञानि मनु

बेकहला उछ ॥ मनै मोक्षः मनै बंधन भया पक्षि देवो निरेजन यके छ अर्को
 छेन ॥ को वंधन को मोक्ष उने छ अरु छेन ॥ वंध मोक्ष कसा हो भनौ लात ॥
 गगनो रगमा करः हट घटि न्याय छः मृग वी श्याय किन भगान्याय छ
 लोहा चा मुरु न्याय छ ॥ राज विज न्याय छ यो मुद्रा जित्यो भया मात्री पर
 मात्मा स्वह प होई जी छः जिव मुक्ति कहला उछ ॥ त स अर्थ वुंल माया यके
 छ ॥ ५२ ॥ फेरि भुक्ति आधा सलोक लेः कोटि गृथ को म म भेद के हे को छ
 मुन ॥ वुंल भयो को सा बे छ न ॥ वुंल माया भी दे हो भंयाः द्वित वादि जग
 त मिथ्या छ ॥ केवलः जिव वुंल माया यके छ जो मो छेन ॥ ५३ ॥ मन माया
 ह प क नः उनु यके क न ॥ मन माया समाई ॥ तिन लोक संसय पदि वा को व क न

०
॥२५॥ यो सो यो वेदी तमासु को रस नि बोहि जिव वृत्त को भेद यके हो भैया वेदा त सासु
लाई ज ज्ञे होई न भनि निर्वीदु गच्छ ॥ ते भ्रातृ ई नै वेदा त ह रुका पावले गऐ भ
वे क जो नि मा ज म मर्न भे न क वा मा फे रै रहै क न भैया पु मा र छ ॥ ५५ म ई ति प्रा

य ज म वे दी तः स नृ ता मी ठा म्बर गीता भाखा दि य सि री त सं पु री त म्

७
विर पु ता प सिं ह म ल्ल से गु क वा के ले सा हि पु सि द्ध ग न्या को मा ॥ १६७९ ॥२५॥
सा ल सा र वा द व दि ३ ऐ ज मा बो ता रा व स्या रा मा न द स्वा मि ले सा रि ले
या को क से ले लो भ न ग र्नु वा ही छ भ या सा रि ले नु कू छ ॥ ॥ ॥